वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

"प्रकृति कार्यक्रम" के अंतर्गत जवाहर नवोदय विद्यालय, लातेहार, में पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम

दिनांक: 23.08.2022

आयोजित प्रकृति कार्यक्रम की झलकियां

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिशद देहरादून एवं जवाहर नवोदय विद्वालय समिति नोएडा के बीच समझौता ज्ञापन के आलोक में वन उत्पादकता संस्थान, राँची के एक दल द्वारा प्रकृति कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक 23–08–2022 को जवाहर नवोदय विद्यालय बाजकुम लातेहार (झारखंड़) में पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय के 10–12 शिक्षक के अलावा लगभग 350–400 विद्यार्थियों ने भाग लिया

कार्यक्रम का संचालन करते हुए विद्यालय के शिक्षक श्री उपेन्द्र सिंह ने संस्थान के अधिकारियों का स्वागत करते हुए विद्यार्थियों से पर्यावरण का महत्व एवं पर्यावरण प्रदूशण के दुश्परिणाम को बताते हुए इसकी सुधार एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति सतर्क रहने की बात कही। उन्होंने वन उत्पादकता संस्थान, राँची के इस पहल की सराहना की। श्री एस० एन० सिंहा ने विद्यार्थियों से अपील की कि आज का कार्यक्रम धरती के सभी जीव जन्तुओं की सुरक्षा के लिए आवश्यक है। उन्होंने मानवीय कारकों को पर्यावरण के नुकसान हेतु जिम्मेदार बताया एवं मानव द्वारा ही सामूहिक प्रयास से इसका समाधान भी सम्भव बताया।

वन उत्पादकता संस्थान के श्री बी० डी० पंडित तकनीकी अधिकारी ने बताया कि ब्रह्मांड के जीव जन्तुओं के आश्रय के लिए धरती के अलावा कोई दूसरा विकल्प ग्रह उपलब्ध नहीं है, अतः पृथ्वी की सुरक्षा ही मानव सहित प्रत्येक जीव जन्तु के लिए सुरक्षित जीवन का आधार है। वैश्विक तापन, हरित गृह प्रभाव की व्याख्या करते हुए उन्हेंने बताया कि कार्बन डाई–आक्साईड का आवश्यकता से अधिक उत्सर्जन इन समस्याओं का मूल कारण है। विकास को अवरुद्ध किए वगैर इस समस्या पर काबू पाने के लिए वृक्षारोपण एक सफल उपाय है। एकल उपयोग के प्लाश्टिक का उपयोग बन्द करने की चर्चा करते हुए श्री पंडित ने कहा कि आपकी अपील भावनात्मक होगी और हम प्लाश्टिक का उपयोग को कम करने में सफल हो सकते है। उन्होंने अपील किया कि प्रत्येक छात्र–छात्रा अपने जन्मदिन पर एक पेड़ लगाए एवं सुरक्षा करें। श्री एस० एन० वैद्य मुख्य तकनीकी अधिकारी ने जंगल एवं वन्य जीवों के सम्बन्ध की चर्चा करते हुए बताया कि जंगलों के दोहन के कारण काफी संख्या में वन्य जीव पलायन कर रहें हैं तथा कुछ तो विलुप्त भी हो चुके हैं। अतः पौधा लगाकर हमें वन वर्धन पर ध्यान देना चाहिए। लगाने के साथ उसे सुरक्षित रखने का भी ध्यान रखें। संस्थान के ही श्री रविशंकर प्रसाद मुख्या तकनीकी अधिकरी ने पर्यावरण एवं वन के महत्व को बताते हुए प्रत्येक वृक्ष प्रजाति की पर्यावरण में भूमिका को समझाया। वृक्षों से फल, छाया के अलावा खाद्य पदार्थ, औशधि, कपड़ा, जूट, तेल आदि प्राप्त होते हैं जो मानव की मूल आवश्यकताओं मे आता है। अनेक जीव जन्तु वन के आभाव में विलुप्त हो रहें हैं तथा यदि अब भी हम सचेत नहीं हुए तो विनाश अवश्यसम्भावी है। विलुप्त होते वनस्पतियों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि प्रत्येक प्रजाति का अपना महत्व है। विद्यालय परिसर में उपलब्ध वृक्षों का परिचय कराते हुए उन्होंने उसके जैविक नाम कुल तथा प्रजाति को समझाया।

इस अवसर पर विद्यालय के छात्र श्री विवेक कुमार एवं कुमारी वशैाली ने भी अपनी बात रखी एवं पर्यावरण की परिभाशा सहित कई अन्य पहलुओं को उद्धृत किया। उन्होंने ग्लेश्यिर पिघलने के कारण, दुश्परिणाम एवं जीवों का खाद्य श्रृंखला की भी चर्चा की।

इस अवसर पर विद्यालय के श्री उपेन्द्र सिंह शिक्षक ने विभिन्न पर्यावरणीय दुश्प्रभावों की जानकारी से विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए वन उत्पाकता संस्थान के अधिकारियों का धन्यवाद किया एवं विद्यार्थियों से अपील किया कि प्रत्येक छात्र–छात्रा एक–एक पेड़ लगाकर अपना सेल्फी भेजें तथा एक साल तक बचाकर रखने एवं सेल्फी भेजने से विद्यालय प्रशासन कार्यक्रम कर प्रोत्साहित करने का प्रयास करेगी। लगभग सभी शिक्षकों ने इस तरह के कार्यक्रम को लगातार जारी रखने का आग्रह किया। कार्यक्रम के आखिर में शिक्षकों छात्रों एवं वन उत्पादकता संस्थान के अधिकरियों द्वारा संयुक्त रूप से मोहगनी एवं सजावटी बांस पौधों का रोपन किया गया।

इस कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षक श्री एस० एन० सिंहा, श्री उपेंद्र सिंह, श्री एस० के० ओझा, श्री एस० के० राम, श्री आर० पी० सिंह, श्रीमती पूजा कश्यप, श्रीमती सी० एल० हेल्टा, श्रीमती जे० बोरकारकी एवं श्री तरूण कुमार उपस्थित रहें एवं कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्थान के श्री एस० एन० वैद्य, श्री रविशंकर प्रसाद, श्री निसार आलम एवं श्री बी० डी० पंडित ने अपना योगदान दिया।

प्रकृति कार्यक्रम

आयोजित प्रकृति कार्यक्रम की झलकियां

आज़ादी का अमृत महोत्सव

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)